हिंदी दिवस

हिंदी की न ही कोई तुलना हो सकती है और न ही इसके महत्व की व्याख्या। इसी भावना को व्यक्त करने के लिए विद्यालय में कवियों द्वारा लिखित सुंदर भाव विभोर कर देने वाली कविताओं का आयोजन किया गया जिसमें कई युवा कलाकारों ने अपनी प्रतिभाएं दिखाकर इस मंच को मंत्र मुग्ध कर दिया। हिंदी दिवस को अविस्मरणीय बनाने वाले युवा कवि और स्कूल के पूर्व छात्र श्रीमान वरुण शुक्ला जी की गरिमामयी उपस्थिति के साथ कवि-दरबार की कुछ अविस्मरणीय तस्वीरें।

मां भारती के मस्तक का श्रृंगार है हिंदी हिंदुस्तान के बाग की बहार है हिंदी ।

घुट्टी के साथ घोलकर मां ने पिलाई थी

स्वर फूट पड़ा वहीं मल्हार है हिंदी ।

तुलसी कबीर और रसखान के लिए

जो ब्रह्म कमंडल से निकली वहीं धार है हिंदी।

माना कि रख दिया है संविधान में मगर

पन्नों के बीच आज तार तार है हिंदी।।

सुनकर के तेरी आह व्योम थर -थरा रहा

वक्त आने पर बन जाएगी तलवार यह हिंदी।

कवि दरबार की कुछ अविस्मरणीय तस्वीरें